NJESR/August-2024/Volume-6/Issue-8 E-ISSN-2582-5836
DOI-10.53571/NJESR.2024.6.8.10-15

नवगीत परिभाषा काव्यरूप एवं नवगीतकारों के गीतों की विशेषताएँ

संगीता झगटा
सह-आचार्या हिंदी विभाग
राजकीय कन्या महाविद्यालय, शिमला – 01
E-mail :- sangeetajhagta@gmail.com

(Received:18July2024/Revised:20July2024/Accepted:15August2024/Published:16August2024)

नवगीत की परिभाषा

नवगीतकार शंभूनाथ सिंह ने नवगीत को स्वरूप को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि "नवगीत बोधात्मक दृष्टि से और शिल्प की दृष्टि से भी पारंपरिक गीत तथा नई कविता से भिन्न स्वरूप लिए हुए है।"

डॉ. शंभूनाथ सिंह का लेख 'नवगीत' जो 'अकविता 1964 नामक संकलन' में छपा, उसमें इन्होंने नई कविता और नवगीत में कोई अंतर स्वीकार नहीं किया है। इनके अनुसार, "नवीन पद्धत्ति और विचारों के नवीन-आयामों तथा नवीन भाव-सारणियों के अभिव्यक्त करने वाले गीत जब भी जिस युग में लिखे जायेंगे – नवगीत कहलाएंगे।"

डॉ. रामदरश मिश्र ने नवगीत की परिभाषा इस प्रकार दी है, "नवगीत नई कविता का सहवर्ती है, विरोधी नहीं।"तात्पर्य यह है कि नवगीत में भी नई कविता की तरह स्वानुभूति की प्रधानता, व्यैक्तिकता की प्रधानता, मुक्त छंद, लय अर्थ के प्रति आस्था उसके भावों की मौलिकता आदि विशेषताएं मिलती है।

बालस्वरूप राही ने नवगीत के लिए आधुनिकता को अनिवार्य माना है। इनके अनुसार, "जीवन को मृत से पृथक छांट सकना सच्ची आधुनिकता है। सच्ची आधुनिकता समकालीनता से एक सर्वथा भिन्न तत्व है 'नवगीत'। केवल पाठ्य है और इसमें भावुकता का कोई स्थान नहीं है। इसमें शास्त्रीय रस न होकर संवेदनात्मकता होती है।"

डॉ. रवींद्र भ्रमर के अनुसार, "नवगीत में हार्दिकता तथा अनुभूति की प्रधानता आवश्यक है। नवीन शिल्प-विधान के साथ-साथ नवगीतों में लयात्मकता और संप्रेषणीयता भी अनिवार्य है।"

गिरजाकुमार माथुर के अनुसार, "खंड बिंबों की अनेक छंदमुक्त रचनाएँ जो भावना के विस्तार में न जाकर सांकेतिक रूप से अनुभूति के एक बिंब को व्यक्त करती हैं और नए गीत को काव्य की कोटि में लाती है। इनका लघु आकार संक्षेप तथा आत्म-निवेदन इन्हें नवगीत की परिभाषा के अंतर्गत लाता है।"

नवगीत की इन परिभाषाओं से यह स्पष्ट होता है कि अभी तक नवगीत का स्वरूप अस्पष्ट है प्रत्येक नवगीतकार अपना-अपना राग अलाप रहे हैं, केवल आधुनिकता, वैज्ञानिक युग बोध और नई सौंदर्य चेतना आदि नवगीत के व्यावर्तक गुण सिद्ध नहीं हो सके हैं। यह सभी तत्व तो प्रत्येक साहित्यकार अपने साहित्य में रूपायित किया करते हैं। नवीनता के अतिरेक में बेसुध बहने वाले नवगीतकारों को यह स्मरण रखना होगा कि कोई भी नवीन उपलब्धि पुरानी उपलब्धियों की देन हुआ करती है। गीत में भावना का होना अति आवश्यक है यही नवगीत को नई कविता से अलग पहचान देती है।

नवगीत का काव्यरूप

नवगीत नवता और गीतत्व का संश्लिष्ट रूप है। नवता इसके युगानुरूप परिवर्तन की परिचायक विशेषता है, गीत इसका मूल काव्यरूप है। शब्द व्युतपत्ति की दृष्टि से जिसे गाया गया है, वह गीत है।आत्माभिव्यक्ति को शास्त्रीय शैली में गीत का महत्वपूर्ण तत्व माना गया है। नवगीत में आत्मानूभूति से अभिप्राय उस गीत से है जो जनसाधारण के दुःख-सुःख को अपने गीतों में अभिव्यक्त करने की क्षमता रखता है।

नवगीतकार केवल कोरी कल्पना को लेकर नहीं चलता, बल्कि समाज के साथ अनुभूति के स्तर पर संबंध बनाकर चलता है। नवगीतकार स्थितियों को भोगता है और सामयकि युग की वेदना को अपने गीतों के माध्यम से मुखर करता है। नवगीते के अधिकांश कवियों ने अपने गीतों में सामाजिकता के स्वर को अधिक तीव्रता से उभारा है। जीवन की आशा-निराशा और हर्ष-विषाद से पूर्ण घड़ियों को चाहे ये उनके अपने से संबंधित हों या उससे परे। सभी अपनी अनुभूतियों में इन्हें रंगकर विविध रूप में

Created by Universal Document Converter

प्रस्तुत किया है। इसमें राजनैतिक, सामाजिक शोषण से उत्पन्न त्रास, घुटन के चित्र हैं। नवगीत में यदि गाँव का चित्रण है तो महानगरीय बोध भी है। गीत भिन्न-भिन्न कालों में युग-चेतना की अभिव्यक्ति के लिए विभिन्न आकारों में ढलता रहा है। किसी ने कम पदों में गीत लिखे हैं तो किसी ने पदों का विस्तार किया है। प्रारंभिक गीतों में वस्तुसत्य की पकड़ उतनी नहीं मिलती, जितनी कि मध्ययुगीन रोमानी दृष्टि और सौंदर्यबोध ही अधिक मिलता है। छायावाद के बाद जिन गीतकरों ने भी गीत लिखे उन सबका संबंध मध्यवर्गीय समाज से था।इन्हें मानसिक यंत्रणा से गुज़रना पड़ा और ऐसे गीतकार कल्पना के पंख सजाकर नहीं उड़ सकते थे। इसी कारण आंकरिक आक्रोश को मुखर करना इनका लक्ष्य बन गया। जहाँ तक भाव-संप्रेषण का सवाल है सभी गीतकार अपने दायरे में पूर्ण सफल रहे।

यह सच है कि आज के युग की सारी जटिलताओं को गीतों के माध्यम से नहीं व्यक्त किया जा सकता, किंतु कुछ कथ्य अपने स्वरूप में आज भी गीतात्मक हो सकते हैं।

डॉ. शंभूनाथ सिहं के अनुसार, "नई कविता आधुनिक व्यक्ति मानव की कविता है। अतः उनकी दृष्टि में नवगीत की पहचान भी इससे विलग नहीं होनी चाहिए। नई कविता से नवगीत का अलगाव कोई खास मायने नहीं रखता क्योंकि नई कविता एक काव्यगत शैली मात्र है।"

नवगीत में मानव जीवन की अनुभूतियों को ज्यों का त्यों रखने की क्षमता है। अतः कह सकते हैं कि नवगीत मानव समाज की कविता है। इस विधा ने बराबर उखड़ते हुए क्षण और टूटती हुई साँसों को जोड़ने का कार्य किया है। मानवता की भावना का विकास इनके गीतों में हुआ है। दुखियों का क्रंदन, किसान, मजदूर आदि ही इनकी कविता के विषय हैं।

नवगीत में जहाँ प्रेम का खुला चित्रण मिलता है वहीं इसमें यौन कुंठा, वासना की पुकार है। छायावाद की तरह नवगीतों का प्रेम चित्रण प्रकृति को मध्यस्थ बनाकर, कल्पना के रंग में रंगा हुआ नहीं है, इसमें तो उस प्रेम का चित्रण है जिसे जनमानस दिन-रात अनुभव करता है।

डॉ. शंभूनाथ सिंह के अनुसार, "नवगीत लेखन किसी पूर्व नियोजित काव्य रूप विशेष की एक नामी कार्यशाला का संकर उत्पादन नहीं है। इसके उत्पादकों, समीक्षकों, भाष्यकारों तथा वितरकों की भी पहले से नियुक्तियाँ नहीं हुई हैं और न इसमें किसी प्रकार के आरक्षण-वृत्त ही रहे हैं। नवगीत सृजनात्मक धरातल पर स्वतः बदलते हुए मौसम की पहचान और उसकी सही स्वीकृति है। इसमें हर स्तर पर जो कुछ है, नितांत अपना और ज़रूरी है।"

नवगीत की विशेषताएँ

नवगीत काव्य छायावाद की विशिष्ट देन है जिसमें भाव की गंभीरता, कल्पना की उत्कृष्टता तथा कला का गरिमा अपनी चरम सीमा स्पर्ष करती है, परंतु उत्तर छायावादी काल में इसने नया मोड़ लिया। नए गीतकारों ने नई चेतना को अभिव्यक्ति दी है। साहित्य की प्रवृत्तियों का मूलाधार उनको प्रभावित करने वाली जीवन-दृष्टि तथा उसमें व्यक्त चेतना ही अधिक उपयुक्त हो सकती है। यह ठीक है कि नए काव्य का स्वरूप परंपरागत हिंदी गीतिकाव्य से भिन्न है। इसमें प्रेम नित्य जीवन का प्रेम है, वह न तो तलवारों की छाया में पलने वाली वीरता है, न ही अभिसारिकाओं की प्रणय याचना है और न ही रहस्यलोक को आलोकित करने वाला कोमल भाव है। इसका स्वरूप लौकिक, विश्वसनीय तथा मानवीय है। गीतिकाव्य की धारा एक नया मोड़ लेकर अधुनातन युग चेतना का स्वरूप है। व्यक्तिगत यथार्थ तथा सामाजिक यथार्थ दो मूल प्रवृत्तियों अथवा विचारधाराओं में लक्षित होती है।

नवगीतकार यथार्थ से जूझता हुआ जीवन-संघर्ष को महत्व देता है। नवगीतकार ने संपूर्ण भारतीय चेतना को आत्मसात करके स्वयं को आधुनिक युगबोध से जोड़ा है। आधनिकता की जैसी तीव्र अभिव्यक्ति नवगीत में हुई है वैसी परंपरागत गीत में नहीं हुई है। नवगीत की सोच भावुकता से नहीं जुड़ी, इसने तो जनजीवन से निकट का संबंध स्थापित किया है। इन्होंने काव्य में नए एवं अछूते विषयों को ग्रहण किया और पुराने विषयों को नई दृष्टि से देखा है।

नवगीतकार ने अपने दुःख-सुःख से ऊपर उठकर आम जनता के उत्पीड़न को अपने गीतों का विषय बनाया है। मूल्यहीनता ने हमारे समाज को जकड़ लिया था, राजनीति का रूप विकृत हो रहा था, परंतु नवगीतकार इस बिगड़ती हुई व्यवस्था के प्रति सजग था, इसलिए अपने गीतों में इन्होंने समाज के किसी कोने को अछूता नहीं रखा।

नवगीतकार ने लोक संवेदनात्मक परिवेश, वस्तुपरक जीवन दृष्टि तथा युगानुरूप भाषा के बल पर गीत को नई भाव-भूमि प्रदान की।डॉ. रवींद्र भ्रमर नवगीत की सामान्य विशिष्टताओं की ओर संकेत करते हुए कहते हैं, "अनुभूति की ताजगी, अभिव्यक्ति का सीधापन, भाषा की सरलता, छंद की एक स्वाभाविक लचीली गति तथा संक्षिप्तता कुल मिलाकर मेरी समझ में नवगीत सृजन की कुछ अनिवार्य विशेषताएँ हैं।"

Created by Universal Document Converter

यह पहले ही कहा जा चुका है कि नवगीतकार कवि किसी विशेष आँदोलन से बंधे नहीं हैं, इसलिए यह ज़रुरी नहीं कि इनकी विचारधाराओं, मान्यताओं अथवा रुझानों में सब स्थानों पर समानता हो, फिर भी कुछ तो समान काव्य-विधा अपनाने के कारण और कुछ सामयिक युग बोध के प्रति सचेत रहने के कारण इनकी भाव-भूमियों में एक प्रकार की एकता भी पाई जाती है। नवगीत की अन्य विशेषताएँ इस प्रकार से है –

सामाजितक चेतना

नवगीत की महत्वपूर्ण विशेषता सामाजिक चेतना की अनुभूति एवं अभिव्यक्ति है। ये कवि युग के प्रभाव से अछूते नहीं रहे, यही कारण है कि नवगीतकार अपने व्यैक्तिक प्रणय अथवा जीवन के अतिरिक्त संसार और समाज के विषय में लिखने को बाध्य हुए। व्यैक्तितक प्रणय इन्हें अपनी ओर खींचता अवश्य है परंतु सामाजिक विषमताएँ इन्हें अपनी सीमा में नहीं रहने देती। ये सामाजिक विषमताओं से संघर्ष करन के लिए तत्पर रहते हैं।

"कि जब तूफान आया, हिलोरों ने बुलाया है,
तुम्हारी नाव क्या तट से बंधी रह जाएगी।"

मृत्यु तथा जीवन की क्षणभंगुरता के सबसे अधिक उपासक, गोपाल दास नीरज में भी सामाजिक चेतना को देखा जा सकता है।

प्रारंभिक नवगीतकार भले ही कल्पना के आकाश में उड़े हों परंतु अपने सामाजिक दायित्व का निर्वागृह इन्होंने भली-भांति किया है। इन्होंने घुटनभरे वातावरण से जनसामान्य को बाहर निकाला। शुद्ध प्रेम और सौंदर्य के गीतों में भी ज़मीन के प्रति प्यार उभरा है।

ओम प्रभाकर के गीतों में घरेलू जीवन का दर्द, घर के अभाव का दर्द उभरा है। आज के जीवन की विसंगतियों और व्यक्ति के आहत अनुभवों के चित्र उभारने में नवगीतकार वीरेंद्र मिश्र एवं बालस्वरूप राही के नाम उल्लेखनीय हैं। त्रिलोचन के गीतों में इनका संघर्षशील व्यक्तित्व, सामाजिक बोध, लोकोन्मुख दृष्टि और सहन-सधी हुई अभिव्यक्ति उभरी है। नए गीतकारों में तारा पांडे की रचनाओं में वेदना की सहज एवं मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। नारी की विवशता कहीं त्याग, कहीं उदासी, खीज और आंसू का रूप धारण करती है।

नवगीत छायावादी कविता की तरह वेदना का काव्य है परंतु उस अर्थ में नहीं जिस अर्थ में छायावादी कविता है। नवगीत की वेदना जनजन की यातना को मुखरित करती है। इसके स्वर में आक्रोष, व्यथा और उत्पीड़ना की अभिव्यक्ति है। इन्हें लगता है कि इन्हें स्वार्थी और क्रूर लोगों द्वारा कुचल दिया जाएगा और वह संघर्ष करता हुआ चीखता चिल्लाता रह जाएगा। उसे हमेशा लगता है कि वह चारों ओर से घिरा हुआ है। स्वतंत्रता जीवन का सबसे बड़ा मूल्य है परंतु आज स्वतंत्रता शब्द का अर्थ बदल गया है। आज नैतिकता, न्याय सुरक्षा जैसी कोई चीज़ नहीं रह गई है। इसलिए शोषण और भ्रष्टाचार का शिकंजा दिन-प्रतिदिन कसता चला जा रहा है। नवगीतकारों ने इन स्थितियों को गीत का विषय बनाया है।

नवगीत की वास्तविक भूमिका क्या है इसका विश्लेषण करते हुए श्री देवेंद्र शर्मा इंद्र ने लिखा है, "वर्तमान जीवन के विविध आयाम राजनीति के पैने और नुकीले दाँतों तथा नाखूनों से आज बेहतर दंशित और आहत होकर रक्तरंजित हो चुके हैं। नवगीत इनके रिसते हुए वर्णों पर एक प्रकार से मरहमपट्टी करने की भूमिका अदा करता है। बीहड़ और भयावह रणभूमि में नवगीत एक शस्त्र-सुसज्जित सैनिक न होकर चिकित्सकों का दस्ता है।"

मानवीय आदर्शों के प्रति सजग रहते हुए इसको कलात्मक अभिव्यक्ति देना नवगीतकार ने कविकर्म का उद्देश्य स्वीकार किया है। अनास्था के इस युग में जब नैतिकता का ह्रास और मानवीय मूल्यों का पतन हो रहा है तो सच्चा नवगीतकार मानवता को इस अंधकार से बाहर निकालता है। वह इस कलुषित मानवता से दुःखी है और मानवता की स्थापना करना इसका धर्म बन जाता है।

नवगीतकारों में जो मानवता का आदर्शवादी स्वर है वह युग-निर्माण में प्रमुख भूमिका निभाता है। मानवता की भावना का विकास इन गीतकारों में पूर्ण रूप से हुआ है। दुखियों के क्रंदन को इन्होंने पहचाना है और सहानुभूतिपूर्वक इसके मार्मिक चित्र अंकित किए हैं। द्रवणशील हृदय से निकली ऐसी रचनाएँ पाठक को प्रभावित करने की पूरी क्षमता रखती है।

नवगीतकारों ने दार्शनिक तत्वों के साथ सामाजिक तत्वों का सामंजस्य स्थापित किया है, जिससे रचनाओं में सरसता बनी रही है। विज्ञापन की उन्नति के इस युग में ईश्वर में व्यक्ति का विश्वास वैसे ही कम होता जा रहा है। दूसरी ओर मार्क्सवादी विचारधारा का प्रभाव इन नवगीतकारों पर पड़ा है। इस विचारधारा ने शिक्षित हृदयों से रहे-सहे ईश्वर विश्वास को मिटाने का प्रयत्न किया है। आर्थिक चिंता के कारण उपासना की परंपरा भी कुछ क्षीण हो चली थी फिर भी अध्यात्म की थोड़ी-बहुत भावना इन गीतकारों में पाई जाती है। विद्यावती कोकिल ने तो पूजा के क्षेत्र में क्रांतिकारी विचारधारा का प्रवर्तन किया और इनके काव्य में

Created by Universal Document Converter

लौकिक प्रेम की अनुभूति है। वीरेंद्र मिश्र जैसे गीतकार भी यदा-कदा दार्शनिकता का स्रोत समाजवादि चिंतनधारा से जोड़ते हैं या उस मानवतावाद से जिसे नवयुग की एक स्वाभाविक प्रवृत्ति माना जा सकता है।

नवगीतकारों ने वैयक्तिक अनुभूतियों और संवेदनाओं को भी अपने गीतों में व्यक्त किया है। प्रणय में वैयक्तिकता का समावेश इनकी मुख्य प्रवृत्ति रही है। व्यक्ति मन की विभिन्न रागात्मक वृत्तियों की अभिव्यक्ति नवगीत में की गई है। नवगीतकारों ने समाजोन्मुख दृष्टिकोण को सर्वोपरी महत्व दिया है। सांप्रदायिकता तथा घोर वैयक्तिकता से बाहर निकलकर नवगीत की भूमि अपेक्षाकृत अधि सहज, सरल, स्पष्ट मनवीय और वास्तविक है। छायावादी गीतों में से निराला के ठोस गीतों को छोड़कर बाकी सारे छायावादी गीतों की वैयक्तिकता और नवगीतों की वैयक्तिकता में वही अंतर है जो पीढियों की वैयक्तिकता में हो सकता है। संदर्भों के बदलने के परिणामस्वरूप जो नए संबंध पनपे उसका परिणाम नवगीत है।

आँचलिकता

लोक संवेदना का सीधा संबंध आँचलिकता से है क्योंकि याँत्रिक समता नागरिक, सभ्यता की विशेषता है और प्रकृति वैविध्य ग्राम संस्कृति का धर्म है। डॉ. शंभूनाथ के गीत ग्रामांचल से संबंधित हैं। इन गीतों में गाँव की धरती, खेत-खलिहान, नदी-नाले, पशु-पक्षी, हल-बैल, भाषा, गीत, त्यौहार आदि को इनके बीच रहने वाले व्यक्तियों के साथ समवेत रूप में वाणी दी गई है।

झपझाप लहराती ग्रीवा झुक जाती,
झपझप की कनमुख भेड़ों तक आती
जीवनगीत सुनाती धरती की पुलकित रोमाली,
नीलांबर-छाया में धूम मचाती स्वर्णिम लाली।

कवि ने इन पंक्तियों में स्पष्ट किया है कि जब खेतों में गेहूँ की फसल पक जाती है और गेहूँ की बाली झूमकर जीवन के गीत सुनाकर धरती को रोमांचित करती है तो कृषक के जीवन में इस बाली को देखकर नयी उमंग भर आती है। वह जीवन के प्रति आशावान हो जाता है।

आँचलिकता साहित्य में पाठक और जनजीवन के बीच संयोजन का कार्य करती है। यह देश और काल से पाठक की रागात्मक संपृक्ति को संभव बनाती है। नवगीत इस रूप में राष्ट्रीय काव्य है क्योंकि इसके कवियों ने भिन्न अंचलों के जीवन को प्रस्तुत कर समग्र राष्ट्र का एक समन्वित व्यक्तित्व प्रस्तुत किया है। लोक संदर्भों एव आँचलिकता को अपनाने के कारण नवगीत में प्रकृति का अपना व्यक्तित्व है। डॉ. शंभूनाथ सिंह के गीतों में आँचलिक संदर्भ विशेष रूप से उभरे हैं।

दुर्गम पथरीली ढालों पर घूमा करता,
आवारे सा हिमशिखरों को चूमा करता,
ग्लेशियरों में हिमखंडों के रंग बहता है।

यहाँ पर शंभूनाथ सिंह ने गाँव की दुर्गम पहाड़ियों का चित्रण आँचलिकता के संदर्भ में किया है कि मेरा मन इन पथरीली दुर्गम पहाड़ियों में घूमा करता है जिस प्रकार आवारा कहे जाने वाले लोग इधर-उधर भटकते रहते हैं और बर्फ के टुकडों के समान पानी बनकर नदी के रूप में बहता रहता है। जिस प्रकार पर्वत सदैव विद्यमान रहते हैं उसी भांति मेरा मन हमेशा इन गाँवों की पहाड़ियों में समाया रहता है।

आधुनिक बोध

आधुनिक बोध युगीन चेतना का बोध है या केवल आधुनिक काल की कोई मौलिक उपलब्धि। हर सच्चे सर्जन के मूल में नवीनता होती है। यह नवीनता चेतन-अचेतन दोनों रूपों में सर्जन में प्रतिफलित होती है। हर प्रबुद्ध सर्जक अपने युग का प्रबुद्धचेता होता है, उसकी संवेदना अपने में नवीन तत्वों को समेटती हैं।जब वह सृजन करता है तब उसके व्यक्तित्व में आत्मसात सारी परंपरागत और जीवन चेतनाएं अपने आप व्यक्त होती रहती हैं। आधुनिक युग में धर्म का स्थान अर्थ ने ले लिया, कल्पना का प्रयोग ने, नैतिकता का यथार्थ ने, भावुकता का बौधिकता ने, फलतः नवगीत साहित्य भी विश्वास, आस्था, श्रद्धा के स्थान पर संदेह, वितर्क, अनास्था और प्रयोग को लेकर चला है।

सातवें दशक में डॉ. शंभूनाथ सिंह आँचलिक संदर्भों से हटकर आधुनिक बोध के यथार्थ पर अपनी दृष्टि केंद्रित कर चुके थे। हिंदी नवगीत संवेदना एवं शिल्प में आधारभूत परिवर्तन उपस्थित हो चुके थे। इसलिए जब वह नवगीत से जुड़े तो अपनी युग-सापेक्ष सजगता के कारण उससे कदम मिलाने में उन्हें कोई कठिनाई नहीं हुई।

Created by Universal Document Converter

प्रेम चित्रण

भारतीय साहित्य में प्रेम चित्रण की परंपरा अत्यंत प्राचीन है। वस्तुतः प्रेम एक ऐसी सहज मानवीय वृत्ति है, जो मनु और श्रद्धा में भी विद्यमान थी। जायसी, सूरदास आदि कवियों में भी प्रेम के चित्रण में बहुत अधिक ख्याति प्राप्त की थी। नवगीत में प्रणय को व्यापक दृष्टि से देखा गया है। डॉ. शंभूनाथ सिंह ने प्रेम की अभिव्यक्ति युगबोध के अनुकूल और अनूरूप की है। इन्होंने प्रेम की ऊब के चित्र खींचे हैं। इसके साथ-साथ रूपासक्ति तथा मिलन के मांसल क्षणों की अनुभूतियों को भी गीतों में बांधने का प्रयास किया है। रूप सौंदर्य के साथ ही वासना की सहज अनिवार्यता को बेझिझक स्वीकार किया है। नवगीत वेदना का काव्य है। डॉ. शंभूनाथ सिंह के काव्य में विरह का मार्मिक चित्रण देखा जा सकता है।

कवि ने अपने प्रेम को किसी देवता के प्रेम से कम नहीं माना है। यदि देवता का प्रेम पवित्र माना जाता है तो कवि कहना चाहते हैं कि उसके प्रेम को क्यों पवित्र नहीं माना जाता। ये सारे आडंबर उसके लिए ही क्यों। उन लोगों के लिए क्यों नहीं जो हमेशा अपने स्वार्थ को देखते हैं। कवि परंपरागत प्रेमियों की भांति प्रिया के मादक-प्रेम की अनुभूति में डूबा है। वह प्रिया से न दूर रह सकता है और न उसके पास रह सकता है। अतः वह प्रिया से रोम-रोम में समा जाने की प्रार्थना करता है। हृदय की अतल गहराइयों से लेकर आकाश के अनंत विस्तार में वह अपने प्रेम को ढूंढना चाहता है।

प्रकृति चित्रण

नवगीतों तक आते-आते प्रकृति का स्वयं बिंब सापेक्ष महत्व स्थापित हो गया था। छायावाद की भाँति अप्रस्तुतार्थ अथवा परोक्ष अर्थव्यंजक प्रतीकमूल प्रकृति का चित्रण नवगीतकारों का उद्देश्य नहीं रह गया था। नवगीत में प्रकृति मनुष्य के सुख-दुख की सहभागिनी हो गई है। मानव का सीधा संबंध समाज से है, इसलिए प्रकृति चित्रों के माध्यम से शंभूनाथ सिंह ने सामाजिक बोध को स्पष्ट किया है।

नवगीतकारों के गीतों में प्राकृतिक सौंदर्य के साथ-साथ व्यक्तिगत पीड़ा का स्वर भी विद्यमान है। इन्होंने प्रकृति के आलंबन रूप-चित्रण के अतिरिक्त अछूते प्रतीक और जीवंत बिंबों को भी प्रस्तुत किया है। प्रकृति के माध्यम से नवगीतकारों ने अपनी संवेदनाओं को अभिव्यक्ति दी है। प्रकृति वर्णन के जो दृश्य इनकी कविता में आए हैं, वे नदी, पर्वत, दिन-रात मौसम आदि हैं। ये स्थितियों से बद्ध नहीं हैं, बल्कि एक अनुभावगत व्यापकता इसमें हैं। अतीत की स्मृतियों एवं प्रणयानुभवों की भावप्रवण स्थितियों का चित्रण भी इनकी कविता में प्रकृति के माध्यम से हुआ है।

प्रकृति चित्रण में डॉ. शंभूनाथ सिंह को विशेष रूची है। नई कल्पनाओं से रचित प्रकृति सौंदर्य के सहज चित्र भी इनके गीतों में परिलक्षित किए जा सकते हैं।

निष्कर्ष

गीतों की परंपरा नई नहीं है। भारतीय संदर्भ में गीत परंपरा वैदिक युग से पाई जाती है, किंतु नवगीत प्राचीन गीतों से अपने विशिष्ट पार्थक्य को प्रकट करते हुए भी उससे जुड़ना चाहता है। नवगीत को सर्वप्रथम चर्चा का विषय 1951-1952 में माना गया तब से अब तक गीतों की लंबी परंपरा मिलती है।

डॉ. विजयेंद्र स्नातक लिखते हैं, "आधुनिक गीत को कुछ गीतकारों ने नवगीत नाम देकर प्रचलित परंपरा से पृथक स्वतंत्र गीत-विधा की जोरदार वकालत की। उनका कहना था कि गीत को रोमानी वातावरण से निकालकर समाज से जोड़कर युग संदर्भ में परखना चाहिए। यदि आधुनिक बोध को गीत में स्थान दिया जाए और सामाजिक संदर्भों से उसकी गहरी संपृक्ति रहे तो वह गीत नवगीत की श्रेणी में रखा जाएगा।"

समय के साथ-साथ परिस्थितियाँ भी बदलती है। नवगीतकारों ने भी अपने समय की परिस्थितियों के अनुसार विषय को अपनाया है। साहित्यार संवेदनशील प्राणी होता है और वह अपनी सामाजिक अनुभूतियों का साहित्य में व्यक्त करता है। नवगीतकार समाज में व्याप्त सभी प्रकार की विसंगतियों का चित्रण अपने गीतों में करता है।

नवगीतकारों ने बोलचाल की भाषा को गीतों के लिए उपयुक्तमाना है दूसरी ओर इन्होंने आँचलिक एवं लोकपरक शब्दावली का प्रयोग किया है। आधुनिक नागरिक जीवन की जटिलताओं को अभिव्यक्त करने के कारण भाषा के सामयिक मुहावरे को इन्होंने अपनाया है। इन्होंने मुख्यतः प्रतीकों का प्रयोग किया है, जिससे भाषा में इन्द्रीय-ग्राह्यता का गुण विशेष रूप से आ गया है। नवगीतकारों के बिंब भी बड़े सार्थक, सजीव व प्रभावपूर्ण हैं।

अतः कहा जा सकता है कि काव्य के शिल्प-विधान के अंतर्गत संवेदना-संप्रेषण के लिए शिल्प के सभी अंगों का उचित प्रयोग हुआ है।

Created by Universal Document Converter

संदर्भ ग्रंथ सूची

क्रं. सं.	लेखक	पुस्तक	प्रकाशक
01.	डॉ. शंभूनाथ सिंह	समय की शिला पर	वाराणसी प्रकाशन, इलाहाबाद
02.	स्नेहलता पाठक	आधुनिक हिंदी काव्य : उद्भव और विकास	विद्याविहार गांधीनगर, कानपुर, पृ. सं. 58-59
03.	डॉ. सुरेश गौतम, वीणा गौतम	नवगीत इतिहास और उपलब्धि	शारदा प्रकाशन नई दिल्ली, पृ. सं. 32
04.	डॉ. राजेंद्र गौतम	हिंदी नवगीत : उद्भव व विकास	पराग प्रकाशन दिल्ली – 32, पृ. सं. 26
05.	डॉ. शिवकुमार मिश्र	नया : हिंदी काव्य	अनुसंधान प्रकाशन कानपुर, पृ. सं. 298
06.	ओमप्रकाश अग्रवाल	हिंदी गीति काव्य	साहित्य रत्न भंडार आगरा 1974
07.	डॉ. शंभूनाथ सिंह	प्रयोगवाद और नई कविता	समकालीन प्रकाशन वाराणसी 1966
08.	डॉ. शंभूनाथ सिंह	नवगीत दशक – 1	पराग प्रकाशन दिल्ली – 1984

Created by Universal Document Converter